कविता

रचयता: श्री राकेश खंडेलवाल

हम तुम वातावरण बचाएं
अपना कमरा साफ़ रखें,
कमरे से जब बाहर निकलें
बिजली का स्विच ऑफ़ करें ।

मेटल की बोतल, कपड़े के
थैलों का उपयोग करें,
प्लास्टिक और फोम की चीज़ों
का हम बहिष्कार करें ।

जितना हो सकता है उतने
पौधे पेड़ लगाएं हम,
अपनी हर कोशिश हो कैसे
धरती स्वर्ग बनाएं हम ।

कविता

रचयता: श्री राकेश खंडेलवाल

आज संकल्प लें हम न दूषण करें
वो सहज साफ़ हो कल का दिन जो उगे
हम जिधर भी बढ़े, राह जो भी चुनें
हो सुगन्धित पावें, जल भी निर्मल मिले।
एक मुट्ठी भरी जो धरोहर मिली
दो गुनी उसको कर के ही लौटाये हम
ताकि कल न कहे जो प्रकृति लिखी
है किताबो में, वो है महज इक भरम।
आज डिस्पोजली संस्कृति छोड़कर
अपनी उपयोगिताओं को वश में रखें
न ही बिजली का खर्चा करें व्यर्थ में
और प्लास्टिक की हम बोतलों से बचें।
जो भी उपयोग हम कर रहे नित्य ही
उसमें पानी हवा औ खनिज संपदा
जिनके निर्माण में युग हजारो लगे
एक पल को भी भूले नहीं ये जरा।